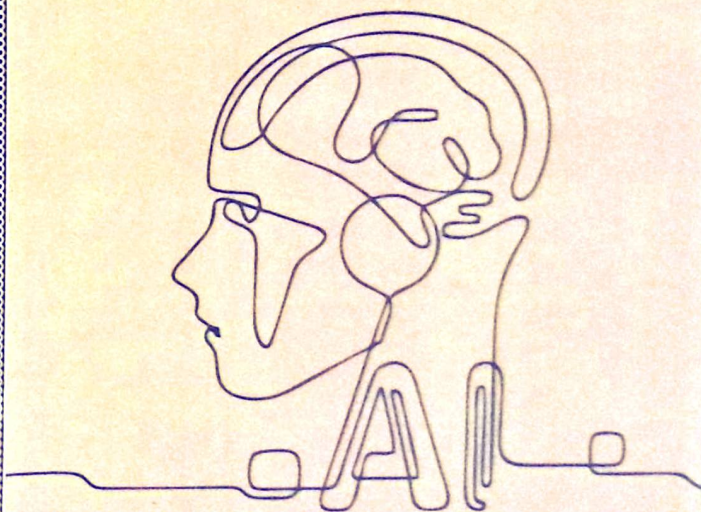


कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

(Artificial Intelligence – Vedic Science)



प्रो० सन्निधानं सुदर्शन शर्मा

विद्वान्

कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

(Artificial Intelligence – Vedic Study)

प्रो० किरतिकान्त शर्मा

कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन



सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

१९९९

१९९९

महाराष्ट्र - श्री ५५५

कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

(Artificial Intelligence – Vedic Science)



प्रो० सन्निधानं सुदर्शन शर्मा
निदेशक



अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान
(बद्री भगत झण्डेवाला टेम्पल सोसाइटी, दिल्ली, द्वारा प्रायोजित)
गुरुग्राम
2024

First published in 2024

© Ashok Singhal Vedic Research Institute, Gurugram

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, except brief quotations, in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage or retrieval system, without prior written permission of the publishers.

Printed and published by:

Ashok Singhal Vedic Research Institute

Huda Market Road, Beside BSNL Office

Block-B, Sector 56, Gurugram - 122011

Ph.: 93118 47118

e-mail: info@ashoksinghalvedicresearchinstitute.org.in

web: www.ashoksinghalvedicuniversity.org.in

Printed by:

Shailee Creations LLP, New Delhi

Phone: 98713 94811

e-mail: creations.shailee@gmail.com

अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान

“वेदोपदेशामृतपिपासुः”



उपाध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

सन्देश

वेदों की महानता और उनके ज्ञान की गहराई को समझने का प्रयास करना सभी का कर्त्तव्य है। वेदों का अध्ययन हमें जीवन के मूल्यों और उद्देश्यों को समझने में सहायक होता है। यह लेख वेदों के ज्ञान को नए युग में प्रासंगिक बनाने के लिए एक प्रयास है।

वर्तमान काल में कृत्रिम बुद्धि का विस्तार बढ़ रहा है। इससे अनेक सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं और साथ ही कुछ समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु वेदों में अन्वेषण करने के लिए लेखक ने एक प्रयास किया है।

मैं लेखक को इस प्रयास के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह लेख वेदों के ज्ञान को प्राप्त करने की दिशा में बुद्धिजीवी समाज को प्रेरित करेगा। वैदिक ज्ञान-विज्ञान के द्वारा व्यक्ति, व्यक्ति से समाज तथा समाज से राष्ट्र का विकास होगा। इसी दिशा में अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान निरन्तर कार्य कर रहा है।

“वेदगवेषणापरायण”

श्री क० वेंकट कोटेश्वर राव
कार्यकारी सचिव एवं कोषाध्यक्ष
अ०सि०वै०शो०सं०

नाजफगढ़ जल संयंत्र परियोजना का विवरण

"आज की योजना, कल का विकास"



श्री. किरण कुमार शर्मा, जल संयंत्र परियोजना अधिकारी

परिचय

जल संयंत्र परियोजना का अर्थसाधक कि योजना की माह में एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है।

जल संयंत्र परियोजना का अर्थसाधक कि योजना की माह में एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है।

जल संयंत्र परियोजना का अर्थसाधक कि योजना की माह में एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना के अन्तर्गत जल संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है।

विषय सूची

अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान – संदेश — श्री क० वेंकट कोटेश्वर राव	5
कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन	9
वेदाध्ययन – प्राचीन दृष्टि	9
कृत्रिम बुद्धि	12
हमारा कर्तव्य	13
जरा सोचिए	14
उपसंहार	15

विषय सूची

पृष्ठ - विषय सूची का क्रम संख्या
संख्या - विषय सूची का क्रम संख्या

अध्याय - विषय सूची

विषय सूची - अध्याय

विषय सूची

विषय सूची

विषय सूची

विषय सूची

कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

वेद की महत्ता सर्वविदित है। इसके महत्त्व के विषय में पाश्चात्य एवं आधुनिक सभी विद्वान् जानते हैं। कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) से प्रभावित संसार को विशेषकर भारत को वेद के अध्ययन से कुछ लाभ है या नहीं, इस विषय पर थोड़ा प्रकाश डालेंगे। इस सन्दर्भ में वेदाध्ययन का मतलब केवल कण्ठस्थीकरण से ही नहीं अपितु अर्थज्ञान के साथ अध्ययन करना है¹।

वेदाध्ययन – प्राचीन दृष्टि

“वेदाध्ययन अवश्य करना चाहिए”² ऐसा वेद का आदेश है। इसलिए वेदाध्ययन करना चाहिए। वेद धर्म-ब्रह्मस्वरूप हैं। वही स्वयं ईश्वर है, अपौरुषेय है। इसमें भ्रम प्रमादादि दोषों का स्थान नहीं है। इसमें आधुनिक विज्ञान का विवरण ढूँढना अविवेकपूर्ण होगा। यह तो सच है कि धर्म-ब्रह्मस्वरूप के निरूपण के प्रसङ्ग में वेदों में भी आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विषय बताए गए हैं। परन्तु इन लौकिक विषयों के ज्ञान के लिए वेद की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मानव कालक्रम से उन सभी लौकिक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, काम, क्रोधादि के कारण। तो फिर किसलिए वेदाध्ययन करना चाहिए। प्रत्यक्ष आदि लौकिक प्रमाणों³ के द्वारा जिस विषय का ज्ञान नहीं हो पाता है उस अलौकिक ज्ञान के लिए वेदाध्ययन करना चाहिए।

वेदाध्ययन करते समय जिन-जिन श्रौतयज्ञों के मन्त्र आते हैं उनके अध्ययन से उसी श्रौतयज्ञों के अनुष्ठान का फल मिलता है⁴। इसलिए वेदाध्ययन करना चाहिए। वेदाध्ययन में ऋचाओं के अध्ययन से देवताओं के लिए दूध (दुग्ध) की आहुति होती है। यजुर्मन्त्रों के अध्ययन से घी की आहुति होती है। सामगान से सोमरस की आहुति होती है। अथर्ववेद के अध्ययन से शहद की आहुति होती है⁵। इसलिए वेद

1 तदधीते तद्वेद। – पा०सू० 4/2/59

2 कृष्णयजुर्वेद, तैत्तिरीयारण्यकम्।

3 प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।

एनं विन्दन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।। – ऐ०ब्रा० सायण भा० भूमिका पृ० सं० 1

4 यं यं क्रतुमधीते तेन तेनास्येष्टं भवति। – पूर्वत्र

5 यद्वचोऽधीते पयः आहुतयः। यद्ययजुषि आहुतयः। यत्सामानि सोमाहुतयः। यदथर्वानि सोमधाहुतयः। – कृ०यजु०तै०आ०प्रपाठक-2, अनुवाक 9-10



10 | कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। ब्राह्मण उत्पन्न होते ही तीन ऋणों के साथ उत्पन्न होता है⁶। उसमें एक ऋण ऋषि-ऋण है। उससे मुक्ति वेदाध्ययन से ही होगी, इसलिए वेद का अध्ययन करना ही चाहिए। मनुस्मृति में कहा गया है कि भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान वेदाध्ययन से प्राप्त होता है⁷। अतः वेदाध्ययन करना चाहिए। हम सभी यदि सामान्य नज़र से देखें तो किसी वस्तु की वास्तविकता नहीं जान सकते। वही यदि वेद नेत्र (वैदिक दृष्टि) से देखें तो सबकुछ अपने वास्तविक स्वरूप में दिखाई देगा। पितर एवं देवता ऐसे ही वेद की दृष्टि से देखते हैं। मनुष्य को भी ऐसी ही दृष्टि अपनाने के लिए वेदाध्ययन करना चाहिए⁸। लौकिक विषयों का अध्ययन करते समय जिन विषयों का हम अध्ययन करते हैं, केवल उन्हीं विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है परन्तु वेदाध्ययन से सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। क्योंकि वेद सर्वज्ञानमय है⁹। प्रयोजन (लाभ) के बिना अर्थज्ञान के साथ षडङ्ग वेदाध्ययन करना ब्राह्मण का कर्तव्य है¹⁰। आध्यात्मिक ज्ञान के साथ ही कुछ लौकिक वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान भी वेदाध्ययन से प्राप्त होता है। जैसे कि (1) पृथ्वी गोलाकार है। (2) सूर्य अनेक हैं। (3) ग्रह-मण्डल में प्रत्येक ग्रह का रंग, आकार, चलन, गति, वेद के अध्ययन से ज्ञात होती है। (4) सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण कब होने वाला है इसका ज्ञान भी (वेदाङ्ग) ज्योतिष शास्त्र के द्वारा प्राप्त होता है। (5) शरीर को प्राकृतिक सूत्रों के आधार पर स्वस्थ रखने के उपाय आयुर्वेद से (जो कि एक उपवेद है, उससे) प्राप्त होते हैं। (6) मन को वश में रखने के उपाय वेदाङ्गभूत योगशास्त्र से प्राप्त कर सकते हैं। (7) विश्व को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए अनेक उपाय वेद में निहित हैं। (8) वेद सोलर एनर्जी के साथ-साथ लूनार एनर्जी का भी संकेत करता है इसलिए वेदाध्ययन करना बहुत आवश्यक है।

हमारे भारत में ऐसे वैज्ञानिक उत्पन्न हुए हैं जिन्होंने वेदाध्ययन के कारण ही शून्य का महत्त्व तथा पाई (Pi) के स्वरूप से लेकर गणित के अनेक तथ्यों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है। (लगध, ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट आदि)। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में सुश्रुत जैसे योग्य चिकित्सक उत्पन्न हुए। भरद्वाज जैसे यात्रिक वैज्ञानिकों ने

6 जायमानो वै ब्रह्मणास्त्रिभिर्ऋणवा जायते। – तै०सं०यजु० 6/3/10/5

7 भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्मसिद्ध्यति। – मनुस्मृति: 12/97

8 पितृदेव मनुष्याणां वेदश्चक्षुस्सनातनम्। – मनुस्मृति 12/94

9 सर्वज्ञानमयो हि सः। मनुस्मृति:। – मनुस्मृति 2/7

10 निष्कारणं ब्राह्मणेन षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च। – महाभाष्य पस्प०



विमान निर्माण प्रौद्योगिकी को ग्रन्थस्थ किया है। महीधर जैसे विद्वानों ने वेदाध्ययन के द्वारा ही सूर्य की गति को मापने की क्षमता प्राप्त की है।

सब कुछ वेद में है ऐसा विद्वान् कहते हैं परन्तु Rexene, Sweater, Cricket, Peddle ऐसी चीजें वेद में कहाँ हैं? यदि यह पूछा जाए तो क्या उत्तर देंगे? जैसा पहले बताया गया, लौकिक विषय के लिए नहीं अपितु धर्म-ब्रह्म से सम्बन्धित अलौकिक ज्ञान के लिए वेद का अध्ययन करना चाहिए।

महर्षि पतञ्जलि ने (200 BC) पूर्व अपने महाभाष्य में लिखा है कि ऋग्वेद की 21 शाखाएं हैं। यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1,000 शाखाएं हैं तथा अथर्ववेद की 9 शाखाएं हैं। पतञ्जलि से पहले ही कितनी शाखाएं लुप्त हो गई हैं। इसका पता ही नहीं चलता है। अभी हमें वेदों की केवल 9 शाखाएं उपलब्ध हो रही हैं अर्थात् पतञ्जलि के समय से ही देखें तो 1,122 वेद की शाखाओं को हम खो चुके हैं। लुप्त हुई वेद शाखाओं में क्या-क्या छिपा हुआ है इसका हमें कोई ज्ञान नहीं है। जो शाखाएं उपलब्ध हैं उन वेद की शाखाओं के यथार्थ ज्ञान के अन्वेषण का प्रयास अभी भी जारी है। वैदिक भाषा अंग्रेज़ी या हिन्दी नहीं होती, इसलिए हमें क्रिकेट जैसे शब्दों को पहचानने में समस्या उत्पन्न होती है। हम सुनते हैं कि पुराकाल में परकाय प्रवेश, अग्निस्तम्भन, वायुस्तम्भन, जलस्तम्भन, गरिमाविद्या (शरीर का भार अचानक बढ़ जाना), लघिमाविद्या (शरीर का भार अचानक कम करना), कामगमन (एक ही क्षण में हज़ारों मील दूर जाना), कामरूप (मनचाहे रूप को धारण करना) जैसे - एक मानव के द्वारा पशु-पक्षी, राक्षस आदि का रूप धारण कर लेना। अदृश्य शक्ति (अचानक अदृश्य हो जाना), पशु-पक्षी इत्यादि की भाषा को समझना इत्यादि विद्याएं प्रचलित थीं परन्तु अब उपलब्ध नहीं हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि वेदभगवान् ने ही इन विद्याओं को और अन्ध विद्याओं को हमसे दूर कर दिया है, क्योंकि इस समय का मानव बहुत स्वार्थी है। सभी को अर्थात् पञ्चभूतों को भी अपने नियन्त्रण में रखकर उपयोग करना चाहता है। ऐसे मनुष्यों के हाथों में उपरोक्त विद्याएं होंगी तो अतिशीघ्र ही (कलियुग के प्रथम पाद में ही) पूरी सृष्टि नष्ट हो जाएगी। ईश्वर इसे मानवकर्तृक प्रलय से कुछ अधिक समय तक बचाना चाहता है (कलियुग के चतुर्थपाद के अन्त तक)।

पारम्परिक और वैदिक विद्वानों को इस तथ्य को समझना चाहिए कि वर्तमान में उपलब्ध वेद-शास्त्र, पुराण इत्यादि प्राचीन ग्रन्थों में निहित विज्ञान से पूर्णतः देश का विकास सम्भव नहीं है। जो वैज्ञानिक तथ्य हम पढ़ते हैं उन सूत्रों का विवरण



12 | कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

(साइंटिफिक/टेक्निकल knowhow) हमारे पास नहीं है। जो भी उपलब्ध है उसको समझने और समझाने वाले विद्वानों की संख्या अब बहुत कम है। अतः हमें आधुनिक विज्ञान का सहारा लेना ही पड़ता है। अन्यथा देश की प्रगति अवरुद्ध हो जाएगी।

कृत्रिम बुद्धि

कृत्रिम बुद्धि का हमें स्वागत करना चाहिए! क्योंकि यह हमारे जीवन की एक अविभाज्य अङ्ग बन गई है, जिसके बिना हमारा जीवन दुःखमय हो सकता है। 20-25 वर्ष पहले मोबाइल फोन धनी व्यक्तियों के हाथों में ही हुआ करता था। परन्तु अब यह भिक्षुकों के हाथों में भी दिखाई देता है। जैसे मोबाइल हमारे जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है वैसे ही हमारे ज्ञान के बिना ही Artificial Intelligence (AI) अर्थात् कृत्रिम बुद्धि जीवन का एक अविभाज्य अंग बन गई है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना हो तो हम Google Map के बिना नहीं जा सकते। हम Spell Check के बिना कुछ लिख भी नहीं (Type नहीं कर) पा रहे हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि आजकल सिनेमाओं की जो कथाएं हैं वे भी कृत्रिम बुद्धि के द्वारा ही बनाई जा रही हैं। उसी प्रकार सिनेमाओं में जो साहित्य संगीत इत्यादि हैं उन्हें भी कृत्रिम बुद्धि ही हमें बनाकर दे रही है। केवल विज्ञान ही नहीं अपितु कलाओं में भी कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग प्रारम्भ हो गया है।

Google Map के कारण ही हम और वाहन चालक मार्गों को भूलते जा रहे हैं। Google Map कभी-कभी गलत मार्ग भी दर्शाता है। यदि मार्ग में किसी स्थान पर थोड़ी सी भीड़ मिल जाए तो दूसरे मार्ग को दर्शाता है जो मार्ग बहुत लम्बा भी हो सकता है। इसकी बजाय हम कुछ समय तक प्रतीक्षा कर सकें तो उस पहले मार्ग से ही सरलता से लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। परन्तु कृत्रिम बुद्धि हमें सोचने ही नहीं देती। Spell Check के कारण सभी लेखों को कृत्रिम बुद्धि ही Spelling दोष तथा व्याकरणगत दोषों को दूर करके एक शुद्ध लेख को तैयार करती है। इसके कारण हम सभी शब्दों के वर्ण/अक्षर और व्याकरण के सूत्रों को भूलते जा रहे हैं। हम इसके इतने अधीन हो गए हैं कि एक वाक्य भी कागज़ पर कलम से नहीं लिख सकते। हज़ारों सिनेमा की कथाओं को एकत्रित करके एक नई कथा निर्मित करनी हो तो कृत्रिम बुद्धि तुरन्त हमें एक नई निर्मित कथा दे देती है। इससे सिनेमा निर्माताओं के समय और पैसों की अधिक बचत हो जाती है। फलस्वरूप कवि, लेखक इत्यादि बुद्धिजीवी व्यक्ति अब सोचना और लिखना भूलते जा रहे हैं। आने वाले कुछ ही वर्षों में शायद ही कोई बुद्धिजीवी कहलाने वाला बचे, अर्थात् सभी



भीख माँगने वाले से लेकर IAS ऑफिसर तक एक ही समान कृत्रिम बुद्धिजीवी हो जाएंगे। साहित्य के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धि के प्रवेश के बाद कॉपीराइट की समस्याएं और Plagiarism (चोरी) की समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। जिसके कारण कोर्ट में कई केस (घटना की शिकायत) आने लगे हैं। हम कृत्रिम बुद्धि के साथ इतनी दूर आ गए हैं कि हमें वापस आना भी मुश्किल है। अतः इसका स्वागत करना ही उचित रहेगा। उपरोक्त कृत्रिम बुद्धि की सुविधाओं तथा दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए एक वैदिक नीति को अपनाना ही हमारा कर्तव्य है।

जब तक मनुष्य ने कृत्रिम बुद्धि को नहीं अपनाया था तब तक बुद्धिमान ही था क्योंकि वह ईश्वर-प्रदत्त बुद्धि का ही प्रयोग करके जीवन जीता था। आधुनिक काल के युवा वैज्ञानिक कहने लगे हैं कि हम विकसित हो रहे हैं और विकास का कारण है कृत्रिम बुद्धि। ठीक है! हम इसे स्वीकार करते हैं परन्तु उनसे एक प्रश्न पूछते हैं कि आप जो कह रहे हैं कि कृत्रिम बुद्धि आधारित विकास, क्या इस विकास से हमारे दुःख दूर हो गए? कृत्रिम बुद्धि के प्रयोगों का दुष्परिणाम पूर्व में ही बताया गया है। एक-एक सुविधाओं से दो-दो असुविधाएं उत्पन्न हो रही हैं। कृत्रिम बुद्धि का विस्तार और देश का विकास होते हुए भी बिमारियों की संख्या घट नहीं रही। चोरी, हत्या, आत्महत्या, बलात्कार जैसी दुष्प्रवृत्तियां कम नहीं हो रही। आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों से जीवन जीना सरल हो रहा है, किन्तु इसके विषम प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं। मानव को शारीरिक सुख सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं किन्तु मानसिक स्वस्थता और भी दूर होती जा रही है। J. Robert Oppenheimer, जिसने Atom bomb बनाया, उसने अन्त में आत्महत्या कर ली। वर्तमान स्थिति में Artificial Intelligence (AI) अर्थात् कृत्रिम बुद्धि सर्वाधिक तेजी से बढ़ती जा रही है। यह हमें सुविधा प्रदान कर रही है, लेकिन इसके अत्यधिक प्रयोग से मानसिक तनाव भी बढ़ता जा रहा है।

हमारा कर्तव्य

इस मानसिक दबाव को दूर करने के लिए धर्म का अनुष्ठान करना चाहिए। “वेदोऽखिलो धर्ममूलम्” धर्म का ज्ञान वेद से ही मिलता है। “धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा”¹¹ यह सम्पूर्ण सृष्टि धर्म पर आधारित है और वह धर्म वेदाधीन है¹²। वेद, धर्म के द्वारा ब्रह्म (मोक्ष) प्राप्ति का मार्ग दर्शाता है। इसी कारण से हमारे पूर्वजों

¹¹ तै० आरण्यक 10/63।

¹² वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। – मनुस्मृ० 2.6



14 । कृत्रिम बुद्धि – वेदाध्ययन

ने वेदाध्ययन अवश्य करना चाहिए ऐसा आदेश दिया है। अतः कृत्रिम बुद्धि से प्रभावित इस दुनिया के लिए वेदाध्ययन करना दिव्य औषधि के समान है। कृत्रिम बुद्धि कदाचित् स्वार्थी मानवों को राक्षस बनाता है। मनुष्य को मनुष्य जैसे जीने के लिए वेदाध्ययन अवश्य करना चाहिए।

जरा सोचिए

कृत्रिम कृत्रिम ही होता है तथा स्वाभाविक स्वाभाविक ही होता है। कृत्रिम बुद्धि, पर-बुद्धि होती है। “परबुद्धिर्विनाशाय”। आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों से जीवन सरल हो रहा है। साथ ही इसके विषम प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं। कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करते समय इन तथ्यों को नहीं भूलना चाहिए।

भारत एक बड़ी आबादी वाला देश है। यहाँ सैकड़ों बुद्धिजीवी व्यक्ति कार्य करने के लिए उपलब्ध हो जाते हैं। जिन पाश्चात्य देशों में आवादी कम है तथा बुद्धिजीवी लोग भी कम हैं उन देशों में कृत्रिम बुद्धि बहुत ही लाभदायक है। लेकिन भारत जैसे देशों में जहाँ बुद्धिजीवियों की कमी नहीं है, वहाँ कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से बेरोज़गारी की समस्या उत्पन्न होगी और अलसता आरम्भ होने लगेगी।

कृत्रिम बुद्धि मानव-कल्पित है जो भ्रामक, प्रमाद आदि दोषों से दूषित होती है। इस मानव-कल्पित बुद्धि से ईश्वर-प्रदत्त स्वाभाविक बुद्धि कई गुना श्रेष्ठ है। जिसका प्रयोग करके हमारे ऋषि-मुनियों ने इतने बड़े ज्ञान-विज्ञान के भण्डार को हमें प्रदान किया है। ईश्वर-प्रदत्त बुद्धि से प्राप्त हुए ज्ञान-विज्ञान के कारण हम न केवल शारीरिक अपितु मानसिक सुख-शान्ति को भी प्राप्त कर सकते हैं तथा मोक्ष भी प्राप्त कर सकते हैं।

भारत विश्वगुरु बना तो ईश्वर-प्रदत्त आत्मबुद्धि से अर्जित ज्ञान-विज्ञान के कारण, न कि कृत्रिम बुद्धि से। कृत्रिम बुद्धि पाश्चात्य वैज्ञानिकों की कल्पना है। इससे ईश्वर-प्रदत्त आत्मबुद्धि कई गुना श्रेष्ठ है।

हम जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धि को अपनाते जाएंगे वैसे-वैसे ही हम पाश्चात्य जगत् के अधीन होते जाएंगे और जैसे-जैसे हम आत्मबुद्धि का प्रयोग करते जाएंगे, सुख शान्ति के साथ-साथ विश्वगुरु के पद की ओर आगे बढ़ते रहेंगे।

मान लीजिए, हमने वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को भी पूर्ण रूप से प्राप्त कर लिया है और हम विश्वगुरु भी बन गए हैं। फिर भी कुछ शेष रह जाता है – वह है सुख और शान्ति। अगर यह नहीं है तो सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ ही है। कृत्रिम बुद्धि



के विकास से सुविधाएं तो प्राप्त होती हैं लेकिन क्या दुःख कम हुआ? नहीं। तो फिर क्या लाभ है? ज्ञान से ही दुःख दूर होता है। ज्ञान वेद से प्राप्त होता है अतः वेदाध्ययन करना चाहिए।

उपसंहार

अतः इसका सार यह है कि – हमें कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करते हुए स्वाभाविक बुद्धि को भी जागरूक रखना चाहिए। वेदों में वर्णित धार्मिक दृष्टि को अपनाने पर ही दुःखों से विमुक्त हुआ जा सकता है।

“सत्यं ब्रूयात्प्रियम्ब्रूयान्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

प्रियञ्च नानृतम्ब्रूयादेषधर्मस्सनातनः।।”¹³



Ashok Singhal Vedic Research Institute

(Badri Bhagat Jhandewala Temple Society, Delhi)

Huda Market Road, Beside BSNL Office

Block-B, Sector 56, Gurugram - 122011

Ph: 98118 47118

e-mail: info@ashoksinghalvedicresearchinstitute.org.in

web: www.ashoksinghalvedicuniversity.org.in